राष्ट्रभाषा प्रवीण उत्तरार्द्ध–1
RASHTRABHASHA PRAVEEN UTTARARDH–1

समय : 3 घंटे] **[पूर्णांक : 100**

1. संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए:- **25**

अ) दुई जगदीस कहाँ तें आये, कहु कवने भरमाया।
अल्लह राम करीमा केसो, हजरत नाम धराया।।
गहना एक कनक तें गहना, इनि महँ भाव न दूजा।
कहन सुनन को दुइ करि थापिन, इक निमाज इक पूजा।।
वही महादेव वही मुहम्मद, ब्रह्मा-आदम कहिये।
कोइ हिन्दू को तुरुक कहावै, एक जमीं पर रहिये।।

(या) निर्गुन कौन देस को वासी?
मधुकर! हँसि समुझाय, सौंह दै बूझति साँच, न हाँसी।
को है जनक, जननि को कहियत कौन नारि, को दासी?
कैसो बरन भेस है कैसो केहि रस में अभिलासी।।
पावैगो पुनि कियो आपनो जो रे! कहैगो गाँसी।
सुनत मौन ह्वै रह्यौ ठग्यो सो सूर सबै मति नासी।।

आ) गाइए गनपति जगबन्दन। संकर-सुवन, भवानी-नन्दन।।
सिद्धि-सदन, गजबदन, विनायक। कृपा-सिंधु, सुन्दर सब लायक।।
मोदक-प्रिय मुद-मंगल-दाता। बिद्या-बारिधि, बुद्धि-बिधाता।।
माँगत तुलसीदास कर जोरे। बसहिं रामसिय मानस मोरे।।

(या) मानुष हौं तो वही रसखान बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।
जो पशु हौं तो कहा बसु मेरो चरौं नित नंद की धेनु मँझारन।
पाहन हौं तो वही गिरि को जो धरयो कर छत्र पुरंदर धारन।
जो खग हौं तो बसेरो करौं मिलि कालिन्दी-कूल कदम्ब की डारन।।

इ) जो कभी अपने समय को यों बिताते हैं नहीं।
काम करने की जगह बातें बनाते हैं नहीं।।
आजकल करते हुए जो दिन गँवाते हैं नहीं।
यत्न करने में कभी जी जो चुराते हैं नहीं।।
बात है वह कौन जो होती नहीं उनके किये।
वे नमूना आप बन जाते हैं औरों के लिए।।

(या) सुन्दर हैं विहग, सुमन सुन्दर;
मानव! तुम सबसे सुन्दरतम;
निर्मित सबकी तिल-सुषमा से
तुम निखिल सृष्टि में चिर निरुपम!
यौवन ज्वाला से वेष्टित तन;
मृदु त्वच, सौन्दर्य प्ररोह अंग
न्यौछावर जिन पर निखिल प्रकृति,
छाया प्रकाश के रूप-रंग!

ई) 'जर्जर जीवन का हटे भार
तन मन से हो यौवन प्रसार
जन की डाली में पात पत्र
गिर पड़ें वेग, आये बहार,
सुन पड़े चतुर्दिक से नूतन
कोकिल कवियों की नयी तान।
रे पांचजन्य, कर पुनः गान।

(या) सौरभ फैला विपुल धूप बन
मृदुल मोम-सा घुल रे मृदु तन!
दे प्रकाश का सिन्धु अपरिमित,
तेरे जीवन का अणु गल-गल!
पुलक-पुलक मेरे दीपक जल!

उ) मस्तक ऊँचा किये, जाति का नाम लिये चलते हो,
पर अधर्ममय शोषण के बल से सुख में पलते हो।
अधम जातियों से थर-थर काँपते तुम्हारे प्राण,
छल से माँग लिया करते हो अंगूठे का दान।

(या) तनिक सोचिए, वीरों का यह योग्य समर क्या होगा?
इस प्रकार से मुझे मारकर पार्थ अमर क्या होगा?
एक बाज का पंख तोड़कर करना अभय अपर को,
सुर को शोभे भले, नीति यह नहीं शोभती नर को,

2. चरण का बिना भंग किये किन्हीं चार दोहों को पूरा कीजिए:- 10

1) सगुण की ..... हमारा ध्यान।।
2) तेरा साँईं ..... ढूँढ़े घास।।
3) नाम रतन ..... नहीं मोल।।
4) सभी रसायन ..... कंचन होय।।
5) भूमि सयन ..... अनुकूल।।
6) हित सन ..... सहज सुभाय।।

3. पठित पद्य-संग्रह के आधार पर किसी एक कवि की काव्यगत विशेषताओं का परिचय दीजिए:- 15

1) कबीरदास 2) तुलसीदास 3) बिहारीलाल

4. रश्मिरथी के आधार पर 'कर्ण' का चरित्र-चित्रण कीजिए। 15

(अथवा)

रश्मिरथी के आधार पर 'अर्जुन' का चरित्र-चित्रण कीजिए।

5. पठित कविता संग्रह के आधार पर किसी एक कवि की काव्यगत विशेषताओं का परिचय दीजिए:- 15

1) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' 2) सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला 3) हरिवंशराय बच्चन

6. किसी एक कविता का सारांश लिखिए। 10

1) मातृभूमि 2) मानव

7. रश्मिरथी के आधार पर किसी एक पात्र पर टिप्पणी लिखिए। 10

1) परशुराम 2) युधिष्ठिर

~ ~ ~ ~ ~ ~ ~